रामत अतरध्याननी

वृंदावनमां रामत करतां, जुजवो थयो सर्व साथ।
वली आवी ततखिण एक ठामे, नव दीसे ते प्राणनो नाथ।।
मारो जीव जीवनजी, लई गया हो स्याम।। १ ।।

वृन्दावन में रास की रामत करते-करते सब सखियां अलग-अलग हो गईं। फिर जब दुबारा एक स्थान पर एकत्र हुईं तब वहां वालाजी दिखाई नहीं दिए। वह कहती हैं, हमारे जीव के जीवन को श्यामजी हर ले गए हैं।

काया केम चाले तेह रे, कालजडूं कापे जेह रे।
ऊभी केम रहे देह, बांध्या जे मूल सनेह।।
त्राटकडे दीधा छेह, मारो जीव जीवनजी लई गया हो स्याम।। २ ।।

कलेजा कांप रहा है। शरीर चलता नहीं। जिससे प्रेम बढ़ा था उसके बिना शरीर कैसे खड़ा रहे? घास के टुकड़े को जैसे तोड़कर फेंक देते हैं, वैसे ही हमको छोड़कर हमारे प्राण श्यामजी ले गए हैं।

सखियो मलीने विचारज कीधो, पूछिए स्यामाजी किहांछे स्याम।
रामतनों रंग हमणां वाध्यो, मन मांहें हुती मोटी हाम।। ३ ।।

सखियों ने मिलकर विचार किया। चलो श्यामाजी से पूछें कि श्यामजी कहां हैं? अभी-अभी तो खेल का आनन्द बढ़ा ही था और मन में बड़ी-बड़ी इच्छाएं थीं।

साथ मांहोंमांहें खोलतां, नव दीसे स्यामाजी त्यांहें।
त्यारे जुजवी दोडी जोवा वनमां, ए बंने सिधाव्यां क्यांहें।। ४ ।।

सब सखियों ने अपने बीच में ढूंढ़ा तो वहां श्यामाजी भी नहीं मिलीं। तब सभी वन में अलग-अलग खोज करने दौड़ीं कि यह दोनों (श्यामा-श्यामजी) कहां गए?

जोवंता जुजवा वनमां, स्यामाजी लाध्या एक ठाम।
स्यामाजी स्याम किहां छे, मारूं अंग पीडे अति काम।। ५ ।।

अलग-अलग वन में खोजते समय श्री श्यामाजी को एक स्थान पर पाया। श्यामाजी से पूछने लगीं कि श्यामजी कहां हैं? उनसे मिलने की तड़प हमें पीड़ित कर रही है।

साथ स्यामाजीने देखी करी, मनडां थयां अति भंग।
स्यामाजी तिहां बोली न सके, जेमां एवडो हुतो उछरंग।। ६ ।।

श्यामाजी के मन में अति उमंग थी। अब वह नहीं है। श्यामाजी की ऐसी हालत देखकर सखियों का मन टूट गया।

घडी एक रहीने स्यामाजी बोल्या, आपणने मूक्यां निरधार।
दोष दीठो जो आपणो, तो वनमां मूक्यां आधार।। ७ ।।

थोड़ी देर बाद श्री श्यामाजी बोलीं कि निश्चय ही वालाजी हमें छोड़ गए हैं। हमारे अन्दर कुछ गलती देखी होगी, इसीलिए वालाजी ने हमें वन में छोड़ दिया।

वचन सांभलतां स्यामाजी केरा, खिण नव लागी वार।
जे जेम आवी दोडती, ते ता पाछी पडियो तत्काल।। ८ ।।

श्यामाजी के ऐसे वचन सुनकर सखियां जैसी दौड़ी-दौड़ी आती हैं, तुरन्त गिरती जाती हैं।

Nijanand App

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, उठाडे सर्वे साथ।
आपणने केम मूकसे, मारा प्राणतणो जे नाथ।। ९ ।।

उनमें से कुछ सखियां खड़ी रहीं। बाकी गिरी हुई को उठाती हैं तथा कहती हैं कि हमारे प्राणवल्लभ हमें कैसे छोड़ेंगे?

सखियो वृंदावन आपण खोलिए, इहांज होसे आधार।
जीवतणो जीवन छे, ते ता नहीं रे मूके निरधार।। १० ।।

चलो सखी हम वृन्दावन में खोजें। वालाजी यहीं होंगे। वह हमारे प्राणों के आधार हैं। वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

सखी ए रे आपणने मूकी गयो, एणे दया नहीं रे लगार।
हवे आंहीं थकी केम उठिए, मारा जीवन विना आधार।। ११ ।।

गिरी हुई सखियां कहती हैं कि वालाजी हमें छोड़ गए हैं। लगता है इनके दिल में जरा भी दया नहीं है। हम अपने वालाजी के बिना यहां से कैसे उठें?

सखी केही रे सनंधे चालिए, मारा लई गयो ए प्राण।
सखियो अमने सूं रे कहो छो, अमे नहीं रे अवाय निरवाण।। १२ ।।

हे सखी! किस तरह से चलें? वह तो हमारे प्राण ही ले गए हैं। तुम हमसे क्या कहती हो, हमसे बिलकुल आया नहीं जाता।

मारो जीव कलकले आकलो, अने काया थरके अंग।
कहो जी अवगुण अमतणां, जे कीधां रंगमां भंग।। १३ ।।

मेरा जीव विरह में व्याकुल होकर रो रहा है और शरीर कांप रहा है। हे सखी! हमारे अवगुण तो बताओ कि जो ऐसे आनन्द को तोड़ दिया है?

सखी दोष हसे जो आपणो, तो वाले कीधूं एम।
चित ऊपर जो चालतां, आपण केहेता करतो तेम।। १४ ।।

खड़ी हुई सखियां उत्तर देती हैं, हे सखी! अपने अन्दर अवश्य कोई गलती होगी। तभी तो वालाजी ने ऐसा किया है, उनकी इच्छानुसार हम चलते तो वह भी हमारे कहने के अनुसार करते।

हाय हाय रे दैव तें सूं करयूं, केम रहे रे कायामां प्राण।
जीवनजी मूकी गया, नव कीधूं ते अमने जाण।। १५ ।।

हाय हाय रे दैव! (विधाता) तुमने यह क्या किया? हमारे तन में प्राण कैसे रहें? हमारे वालाजी हमें छोड़ गए हैं और तुमने हमें सूचित ही नहीं किया?

हाय हाय रे विधाता पापनी, तें कां रे लख्यां एवां करम।
दैवतणी तूंने बीक नहीं, जे तें एवडो कीधो अधरम।। १६ ।।

हाय हाय रे पापी विधाता! तूने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? तुझे परमात्मा का जरा भी डर नहीं है। जो तूने ऐसा गलत काम किया?

हाय हाय रे दैव तूंने सूं कहुं, तें वारी नहीं विधाता।
एणी पापनिए एम केम लख्यूं, वालो मूकसे कलकलतां।। १७ ।।

हाय हाय रे परमात्मा! तूने क्या किया? तूने विधाता को रोका नहीं? इस पापी ने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा कि वालाजी हमें बिलखता हुआ छोड़ जाएंगे।

Nijanand App

सखी गाल दऊं हूं दैवने, के दऊं विधाता पापिष्ट।
एणे लेख अमारा एम केम लख्या, एणे दया नहीं ए दुष्ट।। १८ ।।

हे सखी! मैं परमात्मा को गाली दूं या पापी विधाता को? उस दुष्ट ने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? इसे दया नहीं आई।

सखी दैव विधाता सूं करे, एम रे थैयो तमे कांए।
दोष दीजे कांई आपणो, जे चूक्या सेवा मांहें।। १९ ।।

हे सखी! परमात्मा और विधाता क्या करें? तुम्हें क्या हो गया? अपने अवगुणों को देखो। जिससे हमसे सेवा में भूल हुई है।

सखी सेवा चूक्या हसूं आपण, पण वालो करे एम केम।
आपण ने एम रोवंतां, वालो मूकी गया छे जेम।। २० ।।

हे सखी! माना हमसे सेवा में भूल हुई, पर वालाजी ने ऐसा क्यों किया कि हमें रोता हुआ छोड़कर चले गए।

सखी चूक्या हसूं घणूं आपण, हवे लागी कालजडे झाल।
फिट फिट भूंडा पापिया, तूं हजिए न आव्यो काल।। २१ ।।

सखी! हमसे बहुत गलतियां हुई होंगी, अब तो कलेजे में आग लगी है। धिक्कार है। हे पापी काल! (मौत) तू अभी तक आया क्यों नहीं?

एम रे सखियो तमे कां करो, बेहेनी दृढ करो कां न मन।
आपण ने मूके नहीं, जेहेनूं नाम श्रीकृष्ण।। २२ ।।

हे सखियो! तुम ऐसा क्यों करती हो? मन में दृढ़ता रखो। जिनका नाम श्री कृष्ण है वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

सखी जोइए आपण वनमां, एम रे थैयो तमे कांए।
जेनूं नाम श्रीकृष्णजी, ते बेठा छे आपण मांहें।। २३ ।।

चलो सखी, हम वन में खोजें। तुम ऐसी क्यों हो गई हो? जिनका नाम श्री कृष्ण है वह अपने बीच में ही बैठे हैं।

सुंदरबाई कहे साथने, सखी एम रे थैयो तमे कांए।
केड बांधो तमे कामिनी, आपण जोइए वृंदावन मांहें।। २४ ।।

सुन्दरबाई कहती हैं कि हे सखियो! तुम ऐसी क्यों हो गई हो? कमर बांधो (उठो)। चलो वृन्दावन में देखें।

वन वन करीने खोलिए, वालो बेठा हसे जांहें।
आपणने मूकी करी, जीवनजी ते जासे क्यांहें।। २५ ।।

वन में जगह-जगह जाकर ढूढ़ें। वालाजी यहीं बैठे होंगे। वालाजी हमें छोड़कर कहां जाएंगे?

एक पडे एक लडथडे, एक आंसूडा ढाले अपार।
केम चाले काया बापडी, मारा जीवन विना आधार।। २६ ।।

एक पड़ी है, एक तड़प रही है, एक आंसू बहा रही है और कहती है कि शरीर प्राणों (वालाजी) के बिना कैसे चलें?

Nijanand App

कठण वेला मूने जाय रे बेहेनी, जेम रे निसरतां प्राण
काया एम थरहरे, अमें नहीं रे गोताय निरवाण।। २७ ।।

प्राण निकलते समय जैसा कष्ट होता है, हे बहन! वैसा ही हमें अनुभव हो रहा है। शरीर हमारा कांप रहा है। हम खोजने (वालाजी को) नहीं जा सकते।

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार।
नेहेचे आपणने नहीं रे मूके, तमे जीवसूं करो रे करार।। २८ ।।

सखी कह रही है कि वालाजी तो अपने आधार हैं। तुम ऐसा क्यों करती हो? हौसला रखो। वह हमें नहीं छोड़ेंगे।

विकल थई पूछे वेलडीने, सखी क्यांहें रे दीठा तमे स्याम।
जीव अमारा लई गया, मननी न पोहोंती हाम।। २९ ।।

व्याकुल होकर सखियां बेलों से पूछती हैं कि तुमने हमारे श्याम को कहीं देखा है? श्याम हमारे जीव को ले गए हैं। हमारी कामनाएं अभी पूर्ण नहीं हुई हैं।

ए हँसे छे आपण ऊपर, जो न देखे आपणमां सनेह।
जुओ वीटी रही छे वरने, अधखिण न मूके एह।। ३० ।।

हे सखी! देखो तो, यह बेल भी हमारे ऊपर हंस रही है कि हमारे अन्दर वालाजी के लिए प्रेम नहीं रहा। देखो तो, यह अपने पति (पेड़) से कैसे लिपटी है। आधे पल के लिए भी नहीं छोड़ती।

जुओ रे वलाका एहना, अंगोंअंग वाल्या छे बंध।
तो हँसे छे आपण ऊपर, आपण कीधी न एह सनंध।। ३१ ।।

इसकी लपेट को देखो कि सारे पेड़ में कैसे बन्ध बांधे हैं। तभी तो यह हमारे ऊपर हंस रही है कि हमने ऐसा बन्धन नहीं बांधा।

आ वचन बोले वेलडी, सखी मांहोंमांहें करे विचार।
ए खबर न दिए कोणे कामनी, पोते राची रही भरतार।। ३२ ।।

हे सखी! आपस में विचार तो करें। यह बेल क्या बोल रही है? यह किसी से बात भी नहीं करती और अपने पति (पेड़) से ही लिपटी रहती है।

वन गेहेवर अमें जोइयूं, आगल तो दीसे अंधार।
हवे ते किहां अमे जोइए, मूने सुध नहीं अंग सार।। ३३ ।।

हमने घने से घने वन को खोज लिया है और आगे तो कुछ दीखता ही नहीं है। (कोई जगह शेष नहीं रही) अब हम कहां देखने जाएं? हमें तो खबर ही नहीं लगती।

सखी पगलां जुए प्रीतम तणां, साथ खोले वृंदावन।
नेहेचे आपण ने मूकी गयो, हजी पिंडडा न थाय पतन।। ३४ ।।

सखियां वालाजी के पांव के निशान देख-देखकर वृन्दावन में खोजती हैं और कहती हैं कि निश्चय ही वालाजी हमें छोड़ गए हैं। अब यह शरीर नष्ट क्यों नहीं हो जाता?

Nijanand App

सखी नेहेचल नेहडा आपणां, त्रूटे नहीं केमे तेह।
आणे अंगे मलसूं प्रीतम, सखी आस न छूटे एह।। ३५ ।।

हे सखी! अपना प्रेम अखण्ड है। यह किसी तरह टूट नहीं सकता। वह कहती है कि जब तक इस तन से वालाजी से मिल नहीं लेती तब तक आशा नहीं छूटती।

हाय हाय रे बेहेनी हूं सूं करूं, मूने भोम न दिए विहार।
संधान सर्वे जुआ थया, ए रेहेसे केम आकार।। ३६ ।।

हाय हाय सखी! मैं क्या करूं? यह धरती फट क्यों नहीं जाती? हमारे शरीर के जोड़ अलग-अलग हो गए हैं। यह हमारा शरीर अब कैसे रहेगा?

कलकले मांहें कालजू, चाली न सके देह।
प्राण जीवनजी लई गया, जे बांध्या मूल सनेह।। ३७ ।।

मेरा हृदय फटा जा रहा है। शरीर चलता नहीं है। जिनसे मूल सम्बन्ध था वह वालाजी प्राण लेकर चले गए हैं।

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, मांहोंमांहें करे विचार।
कलकलतां केम मूकसे, कांई आपणने आधार।। ३८ ।।

उनमें कुछ सखियां खड़ी रहीं और आपस में विचार करती हैं कि अपने आधार वालाजी हमें बिलखता कैसे छोड़ेंगे?

आंझो आवे मूने धणीतणो, एम वालोजी करसे केम।
वली रामतडी कीजिए, आपण पेहेली करतां जेम।। ३९ ।।

मुझे वालाजी पर पूरा विश्वास है। वालाजी ऐसा कैसे करेंगे? हम जैसे पहले खेलते थे चलो फिर से वैसे ही खेलें।

केम रे रामतडी कीजिए, काया केम रे चाले विना जिउ।
रामतडी केम थाएसे, उठाय नहीं विना पिउ।। ४० ।।

सखियां कहती हैं कि बिना प्राण के शरीर कैसे चलें और खेल कैसे खेलें? बिना प्रीतम के उठा नहीं जाता तो खेल कैसे होगा?

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार।
मूल रामतडी कीजिए, ए नहीं रे मूके निरधार।। ४१ ।।

हे सखियो! वह तो अपने प्रीतम हैं। तुम ऐसा क्यों करती हो? चलो, पहले वाले (ब्रज के) खेल खेलें। यह (वालाजी) निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

साथ कहे छे अमने रे बेहेनी, इंद्रावती कहो छो सूं।
आणे नेंणे न देखूं वालैयो, तिहां लगे केम करी उठूं।। ४२ ।।

सखियां कहती हैं कि हे बहन श्री इन्द्रावतीजी! तुम हमसे क्या कहती हो? जब तक अपनी आंखों से वालाजी को देख नहीं लेतीं तब तक कैसे उठें?

Nijanand App